

NCERT SOLUTIONS

CLASS - 7th



aglasem.com

Class : 7th

Subject : इतिहास

Chapter : 6

Chapter Name : नगर , व्यापारी और शिल्पीजन

Q1 रिक्त स्थानों की पूर्ति करें :

- (क) राजराजेश्वर मंदिर _____ में बनाया गया था।
- (ख) अजमेर सूफ़ी संत _____ में संबंधित है।
- (ग) हम्पी _____ साम्राज्य की राजधानी थी।
- (घ) हॉलैंड वासियों ने आंध्र प्रदेश में _____ पर अपनी बस्ती बसाई।

Answer.

- (क) ग्यारहवीं सदी में
- (ख) ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती
- (ग) विजयनगर
- (घ) मसूलीपट्टनम

Page : 89 , Block Name : फिर से याद करें

Q2 बताएँ क्या सही है और क्या गलत :

- (क) हम राजराजेश्वर मंदिर के मूर्तिकार (स्थपित) का नाम एक शिलालेख से जानते हैं।
- (ख) सौदागर लोग काफ़िलों में यात्रा करने की बजाय अकेले यात्रा करना अधिक पसंद करते थे।
- (ग) काबुल हाथियों के व्यापार का मुख्य केंद्र था।

(घ) सूरत बंगाल की खाड़ी पर स्थित एक महत्वपूर्ण व्यापारिक पत्तन था।

Answer.

(क) सही

(ख) गलत

(ग) गलत

(घ) गलत

Page : 89 , Block Name : फिर से याद करें

Q3 तंजावूर नगर को जल की आपूर्ति कैसे की जाती थी?

Answer. कुँओं और तालाबों से तंजावूर नगर को जल की आपूर्ति की जाती थी।

Page : 89 , Block Name : फिर से याद करें

Q4 मद्रास जैसे बड़े नगरों में स्थित 'ब्लैक टाउन्स' में कौन रहता था?

Answer. भारतीय व्यापारी , शिल्पकार , मजदूर और अन्य कर्मचारी ब्लैक टाउन्स में रह करते थे।

Page : 89 , Block Name : फिर से याद करें

Q5 आपके विचार से मंदिरों के आस-पास नगर क्यों विकसित हुए?

Answer.

- मंदिर नगर नगरीकरण का एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रतिरूप प्रस्तुत करते हैं। तंजावूर एक मंदिर नगर का उदाहरण है।
- जिससे यह साबित होता है की मंदिर शहरीकरण के लिए कितना महत्वपूर्ण था। मंदिर नगरीकरण का एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रतिरूप प्रस्तुत करते हैं।
- मंदिर अक्सर समाज और अर्थव्यवस्था दोनों के लिए ही अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं।
- शासक विभिन्न के देवी देवताओं के प्रति अपना भक्ति भाव दर्शाने के लिए मंदिर बनाते थे और भूमि एवं धन अनुदान में दिया करते थे।

- मंदिर के कर्ता-धर्ता मंदिर के धन को व्यापार एवं साहूकार में लगाते थे जिससे थोड़ा समय गुजरने के बाद बड़ी संख्या में पुरोहित, कामगार, शिल्पी, व्यापारी मंदिर तथा उसके दर्शनार्थियों एवं तीर्थयात्रियों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए मंदिर के आसपास बसते गए।
- इस प्रकार मंदिर नगरों का विकास हुआ। जिस प्रकार मध्यप्रदेश में भील स्वामीन और गुजरात में सोमनाथ।
- तीर्थ स्थल भी धीरे-धीरे नगरों के रूप में विकसित हो गए।
- वृंदावन और तिरुवन्नमलाई ऐसे नगरों के दो उदाहरण हैं

Page : 90 , Block Name : आइए समझें

Q6 मंदिरों के निर्माण तथा उनके रख-रखाव के लिए शिल्पीजन कितने महत्वपूर्ण थे?

Answer.

- बीदर के शिल्पकार तांबे और चांदी में जड़ाई का काम करने के लिए प्रसिद्ध थे।
- पांचाल अर्थात् विश्वकर्मा समुदाय जिसमें सुनार, कसेरे, लोहार, राजमिस्त्री, और बढ़ई शामिल थे, मंदिरों के निर्माण के लिए आवश्यक थे।
- बिदर के शिल्पकार तांबे तथा चांदी के जड़ाई के काम के लिए इतने अधिक प्रसिद्ध थे कि इस शिल्प का नाम ही बिदरी पड़ गया।
- इसके अलावा वे राजमहलों, बड़े बड़े भवनों, तालाबों और जलाशयों के निर्माण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते थे।
- इसी प्रकार सालियार या कैककोलार जैसे बुनकर भी समृद्धशाली समुदाय बन गए थे।
- वे मंदिरों को भारी दान दक्षिणा दिया करते थे।
- वस्त्र निर्माण से संबंधित कुछ अन्य कार्य, जैसे कपास को साफ करना, काटना और रंगना भी, स्वतंत्र व्यवसाय बन गए थे, के लिए विशेषज्ञता की आवश्यकता होती थी।

Page : 90 , Block Name : आइए समझें

Q7 लोग दूर-दूर के देशों-प्रदेशों से सूरत क्यों आते थे?

Answer.

- सूरत ओरमुज की खाड़ी से होकर पश्चिमी एशिया के साथ व्यापार करने के लिए मुख्य द्वार था।
- 17 वी शताब्दी में वहां पुर्तगालियों, डचों, और अंग्रेजों के कारखाने एवं माल गोदाम थे।
- सूरत एक सर्वदेशीय नगर था, जहाँ सभी जातियों और धर्मों के लोग रहते थे।
- सूरत, मुगल काल में कैंबे (आज के खंबात) और कुछ समय बाद के अहमदाबाद के साथ-साथ पश्चिमी व्यापार का वाणिज्य केंद्र बन गया।
- सूरत में ऐसी दुकानें थी जो सूती कपड़ा, थोक और फुटकर कीमतों पर बेचती थी।
- सूरत के वस्त्र अपने सुनहरे गोटा किनारियों (ज़री) के लिए प्रसिद्ध थे और उनके लिए पश्चिम एशिया, अफ्रीका और यूरोप में बाजार उपलब्ध थे।
- राज्य ने विश्व के सभी भागों से नगर में आने वाले लोगों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अनेक विश्रामगृह बना रखे थे।
- वहां भव्य भवन और असंख्य मनोरंजन स्थल थे।
- सूरत से जारी की गई हुंडियों को दूर-दूर तक मिस्र में काहिरा, इराक में बसरा, और बेल्जियम में एंटवर्प के बाजार में मान्यता प्राप्त थी।

Page : 90 , Block Name : आइए समझें

Q8 कलकत्ता जैसे नगरों में शिल्प उत्पादन तंजावूर जैसे नगरों के शिल्प उत्पादन से किस प्रकार भिन्न था?

Answer. तंजावूर और उसके निकटवर्ती नगर उरैयूर के सालीय बुनकर मंदिर के उत्सव के लिए झंडे झंडियां बनाने का कपड़ा, राजा और अभिजात वर्ग के लिए बढ़िया सूती वस्त्र और जनसाधारण के लिए मोटा सूती वस्त्र तैयार कर रहे थे। यहां से कुछ दूरी पर स्वामीमलाई में स्थापित अथवा मूर्तिकार उत्तम कांस्य मूर्तियां तथा लंबे, सुंदर घण्टा धातु के दीप बना रहे थे।

वहीं कोलकाता के शिल्पकार कताई, बुनाई, धुलाई, रंगाई का धंधा बना लिया इससे इन शिल्पों का बहुत विस्तार हुआ। भारतीय वस्त्रों के रूप रंग और डिजाइन अधिकाधिक परिष्कृत होते गए, किंतु इस काल में शिल्प कारों की स्वतंत्रता घटने लगी शिल्पीजन पेशगी की प्रणाली पर काम करने लगे, जिसका अर्थ यह था कि उन्होंने जिन यूरोपीय एजेंटों से पहले ही पेशगी ले ली थी, उन्हीं के लिए उन्हें कपड़ा बुनना होता था। अब बुनकर को अपना कपड़ा या बुनाई के नमूने बेचने की स्वतंत्रता नहीं थी। उन्हें तो कंपनी के एजेंटों द्वारा निर्धारित डिजाइन के कपड़े उन्हीं की मांग के अनुसार बनाने पड़ते थे।

Page : 90 , Block Name : आइए समझें

Q9 इस अध्याय में वर्णित किसी एक नगर की तुलना आप अपने परिचित किसी कस्बे या गांव से करें? क्या दोनों के बीच कोई समानता या अंतर है?

Answer. बच्चे स्वयं करें।

Page : 90 , Block Name : आइए समझें

Q10 सौदागरों को किन किन समस्याओं का सामना करना पड़ता था? आपके विचार से क्या वैसी कुछ समस्याएं आज भी बनी हुई हैं?

Answer. बच्चे स्वयं करें।

Page : 90 , Block Name : आइए समझें

Q11 तंजावुर या हंपी के वास्तुशिल्प के बारे में कुछ और जानकारी प्राप्त करें और इन नगरों के मंदिरों तथा अन्य भवनों के चित्रों की सहायता से एक स्कैपबुक तैयार करें।

Answer. बच्चे स्वयं करें।

Page : 90 , Block Name : आइए समझें

Q12 किसी वर्तमान तीर्थ स्थान का पता लगाएं। बताएं कि लोग वहां क्यों जाते हैं, वहां क्या करते हैं, क्या उस केंद्र के आसपास दुखाने हैं और वहां क्या खरीदा और बेचा जाता है?

Answer. बच्चे स्वयं करें।

Page : 90 , Block Name : आइए समझें